नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'हिंदी विश्वविद्यालय में विश्व जल दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

जलवायु परिवर्तन से पानी की समस्या पैदा हुई- बाबूजी ढगे

वक्तृत्व प्रतियोगिता, पानी पर फिल्म का प्रदर्शन

वर्धा, 23 मार्च 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में विश्व जल दिवस पर आयोजित व्याख्यान में भारतीय पर्यावरण आंदोलन के सदस्य तथा पिछले पच्चीस वर्षों से जल, जंगल और जमीन के मसले पर भारत भर में जागरूकता लाने में

कार्यरत कार्यकर्ता बाबूजी ढगे ने कहा कि पानी की समस्या अब पूरे विश्व में भयावह रूप धारण कर

रही है और जलवायु परिवर्तन की वजह से जमीन में पानी का स्तर तीव्र गति से घटते जा रहा है। हबीब तनवीर सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने की।

इस अवसर पर मंच पर विद्यार्थी कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय, राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक सहायक प्रोफेसर राजेश लेहकपुरे, अनुवाद अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर

अहमद सिद्दीकी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से विश्व जल दिवस 22 मार्च को व्याख्यान, वक्तृत्व प्रतियोगिता और पानी बचत पर फिल्म प्रदर्शन आदि का आयोजन किया गया। जल संवर्धन विषय पर व्याख्यान में विशेष अतिथि के रूप में बाबूजी ढगे को निमंत्रित किया गया था। उन्होंने पानी की समस्या के वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि केलिफोर्निया जैसे हरेभरे स्थान पर भी पानी की किल्लत हो रही है। पूरे विश्व में नदियों का बहना बंद हो गया है। दूसरी तरफ धडल्ले से हो रहे औद्योगिकीकरण और जंगल काटने से पानी प्रदूषित हो रहा है। 50 वर्ष पूर्व जमीन में पानी की मात्रा 62 प्रतिशत थी जो आज मात्र 28 से भी कम प्रतिशत रह गयी है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने हिंद स्वराज पुस्तक में पानी की बचत का जिक्र किया था और पर्यावरण के दोहन के प्रति चिंता

जताई थी। पिछले वर्षों में पानी के लिए हुए आंदोलनों का जिक्र भी उन्होंने किया। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में जीवन शैली में आए परिवर्तनों से पानी की समस्या और भी गंभीर हो गयी है। ऐसे में हमें बरसात के पानी को व्यर्थ जाने से रोकना होगा।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने कहा कि पानी की बचत और संवर्धन हम सभी की जिम्मेदारी है। प्रकृति के दोहन की वजह से पानी की समस्या पैदा हुई और वह दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। प्रो. अनिल कुमार राय ने कहा कि गावों में तालाब खत्म हो गये है और बरसात के पानी का अनावश्यक बहाव हो रहा है। किसानों के लिए सिंचाई की और पिने के लिए पानी की समस्याएं सभी तरफ दिखाई पड़ रही है। वाटर हार्वेस्टिंग के माध्यम से हमें अधिक से अधिक पानी को रोकना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी बी. एस. मिरगे ने किया। इस अवसर पर हिवरे बाजार गांव पर बनी मनीष सिसौदिया निर्मित फिल्म दिखाई गयी। व्याख्यान के बाद जल संवर्धन पर आयोजित वक्तृत्व प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी राय प्रकट की।